समर्पण की

समर्पण की सामर्थ्य

सामर्थ्य

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जबतक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकेंः** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - The Power of Commitment)

समर्पण की सामर्थ्य

समर्पण की
सामर्थ्य

विषयसूची

परिचय

1. समर्पित व्यक्ति की विशेषताएँ 1

2. समर्पित होने का मूल्य 4

3. क्या आप समर्पित हैं? 8

परिचय

समर्पण एक ऐसा गुण है जो सामान्य रूप से संसार और कलीसिया में दुलर्भता से पाया जाता है। हममें से अधिकांश लोग वह करना चाहते हैं जो आसान है और समर्पित लोगों को ढूँढ़ पाना कठिन है।

समर्पित होने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि एक विशेष कार्य हेतु विश्वासयोग्यता और निष्ठा होना। इसका अर्थ है कि हम जिम्मेदारी के प्रति सजग हैं। हम किसी वस्तु विशेष के बारे में जानबूझकर अपरिवर्तनीय निश्चय करके उससे लगे रहते हैं। समर्पित होना किसी वस्तु विशेष के प्रति अपने परिणाम को प्रकट करना है।

उदाहरण के लिए वह शब्द जिन्हें हम बोलते हैं, और प्रतिज्ञाओं के बारे में सोचें जो हम "समय" के बारे में करते हैं। हम कहते हैं कि हम किसी से अमुक समय पर मिलेंगे और तब हम इस बारे में ढिलाई बरतते हैं। प्रायः हम आधा घण्टा देर से पहुँचते हैं और सोचते हैं कि सब कुछ सामान्य है। परन्तु यह इस बात को प्रकट करता है कि हम अपने शब्दों के प्रति समर्पित नहीं हैं। जब हमने कहा कि हम किसी व्यक्ति से अमुक समय पर मिलेंगे तब हमें उसके विषय में समर्पित होने की आवश्यकता है। मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि पादरी और परमेश्वर के सेवक भी निश्चिन्त हो जाते हैं जब समय की बात होती है। यदि आप परमेश्वर के सेवक हैं तो बहुत से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से, जहाँ आप अपने शब्दों के प्रति समर्पण प्रकट करेंगे वह है समय। जब आप कुछ कहते हैं तो उसका पालन करें।

बाइबल हमें समर्पित होने के विषय में सिखाती है। प्रभु यीशु ने कहाः *"कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है। वह एक से प्रेम करेगा और दूसरे से घृणा करेगा, अथवा वह एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते"* (मत्ती 6:24)। यीशु कहते हैं कि हम इसी प्रकार बनाए गए हैं। मनुष्य

के दो परस्पर विरोधाभासी समर्पण नहीं हो सकते। उदाहरण के लिए हम परमेश्वर और संसार दोनों की सेवा नहीं कर सकते। हम दूसरे से अधिक एक के प्रति समर्पित होंगे। यह सम्भव नहीं है कि हम संसार के मित्र भी हों और परमेश्वर के मित्र हों। *"क्या तुम नहीं जानते कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से शत्रुता करना है। इसलिए जो संसार से मित्रता करते हैं वे परमेश्वर से शत्रुता करते हैं। इसलिए जो संसार से मित्रता करना चाहता है वह अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता है"* (याकूब 4:4)। या तो हम परमेश्वर के मित्र बनते हैं अथवा हम संसार के मित्र बनते हैं। यह दोनों समर्पण एक साथ नहीं हो सकते। हमें एक ही स्वामी के प्रति समर्पित होना है। यीशु हमें बुला रहे हैं कि हम उसके प्रति समर्पित हों और एक मजबूत समर्पण मसीह की देह में होना चाहिए। यह पुस्तक समर्पण की सामर्थ्य पर बल देती है और आपको प्रेरित करेगी कि आप जो कुछ भी करें उसके प्रति समर्पित हों।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
समर्पित व्यक्ति की विशेषताएँ

हम कैसे कह सकते हैं कि हम वास्तव में किसी बात के लिए समर्पित हैं?

कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार

यदि हम परमेश्वर की बुलाहट के प्रति समर्पित हैं, तब इस बात की कोई चिन्ता नहीं होती कि इसकी कीमत कितनी बड़ी है। हम उस कीमत को चुकाने के लिए तैयार होते हैं ताकि परमेश्वर की बुलाहट को पूरा कर सकें। कुछ लोग परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं परन्तु वे कठिन परिश्रम करने के लिए तैयार नहीं होते ताकि उस स्थान पर पहुँच सकें जहाँ परमेश्वर उन्हें रखना चाहता है। यद्यपि परमेश्वर की बुलाहट और उसकी योजना आपके जीवन के लिए है तौभी यह सारी वस्तुएं अपने आप प्रकट नहीं होंगी। आप परमेश्वर के सहकर्मी हैं और सहकर्मी को काम करने की आवश्यकता है। परमेश्वर आपको बुला सकता है कि आप बलिदान करें ताकि वह अपने उद्देश्य आपके जीवन में प्रकट कर सके। यदि आप वास्तव में परमेश्वर के उद्देश्यों के प्रति समर्पित हैं तो उसके लिए कोई भी बलिदान दे सकते हैं।

बाइबल कुछ विश्वासियों के विषय में बताती है, *"और वे मेमने के लहू के द्वारा और अपनी साक्षी के वचन के कारण उस* (शैतान) *पर विजयी हुए है, क्योंकि मृत्यु सहने तक भी उन्होंने अपने प्राण को प्रिय न जाना"* (प्रकाशितवाक्य 12:11)। ये लोग प्रभु यीशु मसीह के प्रति इतने अधिक समर्पित थे कि वे अपने जीवनों को भी बलिदान करने हेतु तैयार थे। यदि हम प्रभु यीशु मसीह के प्रति समर्पित हैं तो कोई भी कीमत इतनी बड़ी नहीं है कि चुकाई नहीं जा सकती, चाहे हमें अपने स्वामी के लिए जीवन भी बलिदान क्यों न करना पड़े।

सारी रुकावटों पर विजय प्राप्त करने के लिए तैयार

वह व्यक्ति जो समर्पित है आसानी से किसी काम को छोड़ नहीं देता। वह किसी आसान रास्ते को नहीं ढूंढ़ता है। यह व्यक्ति अपने समर्पण को पूरा करने हेतु दृढ़ बना रहता है। चाहे उसके मार्ग में कितनी भी रुकावटें क्यों न आएं, वह आगे बढ़ता जाता है और अपने समर्पण हेतु वह सब कुछ करता है। वह व्यक्ति जो वास्तव में समर्पित नहीं है वह अपनी प्रतिज्ञा को केवल तब ही पूरा करेगा जब सारी बातें सुविधाजनक हों। लेकिन जब कुछ कठिनाई आती है, वह उन में परिवर्तन करने के लिए तैयार रहता है ताकि जो प्रतिज्ञा उसने की है वह उसको पूरा न करना पड़े।

समर्पण पर स्थिर रहने की योग्यता

एक व्यक्ति जो समर्पित होता है, वह समर्पित बना रहता है और आसानी से टलता नहीं है। परन्तु एक व्यक्ति जो किसी काम के लिए समर्पित नहीं है वह विचलित होकर उधर बह जाता है जहाँ सुविधा उसको ले जाती है।

लूका 9:57-62

57 "जब वे मार्ग पर चले जा रहे थे तो किसी ने उस से कहा, "तू जहाँ-जहाँ जाए मैं तेरे पीछे चलूँगा।"

58 यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र के लिए सिर छिपाने के लिए भी कोई स्थान नहीं,"

59 तब उसने दूसरे से कहा, "मेरे पीछे चल, "पर उसने उससे कहा, "मुझे पहले जाने दे कि मैं अपने पिता को गाड़ दूँ।"

60 पर उसने उससे कहा,"मुर्दों को अपने मुर्दे गाड़ने दे, पर तू आकर परमेश्वर के राज्य का सर्वत्र प्रचार कर।"

61 फिर किसी एक अन्य ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूँगा, पर मुझे पहले जाने दे कि घरवालों से विदा हो कर आऊँ।"

62 परन्तु यीशु ने उससे कहा, "कोई भी व्यक्ति जो अपना हाथ हल पर रखने के पश्चात् पीछे मुड़कर देखता है परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"

जिस बात की ओर यीशु हमारा ध्यान आकर्षित कर रहे हैं वह यह है कि जब हम समर्पित होते हैं और हमने एक फैसला किया है, "प्रभु, मैं आपके पीछे चलूँगा।" तब उसके विषय में दो मार्ग नहीं होते। यीशु मसीह

के प्रति हमारा समर्पण हमें सांसारिक बन्धन से अलग करता है और हमें इस योग्य बनाता है कि हम उस पर दृष्टि लगाए रहें। यीशु मसीह हमें यह नहीं बता रहे हैं कि हम अपने परिवारों और अपने प्रियजनों को भूल जाएं। यहाँ जो बात है वह यह है कि जो व्यक्ति समर्पित है वह लोगों की दृष्टि में है। वह अपने निकटतम पारिवारिक और महत्वपूर्ण पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के कारण विचलित नहीं होता है। इन में से कुछ भी उसे प्रभु यीशु मसीह की बुलाहट का अनुसरण करने से विचलित नहीं कर सकता है।

2
समर्पित होने का मूल्य

समर्पित होने का क्या मूल्य है? जब अन्य लोग अपनी सुविधानुसार कार्य कर रहे हैं तो आप और मैं क्यों भिन्न बनकर समर्पित बनें? समर्पित होने के क्या लाभ हैं?

सामर्थ्य, स्थिरता और निश्चितता

समर्पित होने से आपके जीवन में बल, स्थिरता और निश्चितता आती है और कठिन समय में हम विचलित नहीं होते।

याकूब 1:8
एक दुचिता व्यक्ति अपने सारे चाल चलन में अस्थिर है।

विश्वास में प्रार्थना करना सिखाने के बाद याकूब अपनी सारी शिक्षा संक्षेप में एक सामान्य कथन, दुचिते व्यक्ति के विषय में याकूब कहकर समाप्त करता है कि एक दुचिता व्यक्ति, दो विचारों का व्यक्ति अस्थिर और अविश्वासयोग्य है। तौभी इसका विपरीत सत्य है। जिसका अर्थ है कि एकाग्र मनवाला व्यक्ति—वह व्यक्ति है जिसने "अपना मन एक कार्य करने" के लिए लगाया है। वह व्यक्ति जो समर्पित है वह स्थिर और अटल है।

आशीषें

विश्वासयोग्य व्यक्ति वह होता है जो समर्पित है। उसका पूर्ण हृदय का समर्पण ही उसे विश्वासयोग्य बनाता है।

नीतिवचन 28:20
विश्वासयोग्य मनुष्य आशीषों की बहुतायत पाएगा।

विश्वासयोग्य व्यक्ति वह होता है जो समर्पित है। उसका सम्पूर्ण हृदय का समर्पण ही उसे विश्वासयोग्य बनाता है। वह व्यक्ति जो अधूरे मन से किसी कार्य को करता है उसको उतना आनन्द नहीं होता जितना की उसको उसमें होता है जो वही कार्य सम्पूर्ण हृदय से करता है। वह व्यक्ति जो इस काम को सम्पूर्ण हृदय से करता है निश्चय ही बेहतर काम करेगा और उसे उत्तम प्रतिफल मिलेगा।

अपने भौतिक शरीर के बारे में सोचें। परमेश्वर ने देह के अंग इस प्रकार बनाए हैं कि वे एक देह के रूप में काम करें। आप अपने हाथ को ऐसा नहीं पाते कि वह आज आपके शरीर में है एवं कल किसी और दूसरे के शरीर में जाकर जुड़ जाएगा। न ही आप अपने हृदय को आज अपने शरीर में धड़कता हुआ पाते हैं और वही कल किसी के शरीर में जाकर धड़कने लगता है। यदि परमेश्वर हमारे शरीर के अंगों को ऐसा बनाता कि वे अलग-अलग हो जाएं और आत्म-निर्भर हों तो हमारे शरीर के अंग हृदय, फेफड़े, हाथ, आँखे आदि इधर-उधर घूमते हुए पाए जाते । कभी ये अंग एक साथ जुड़ जाते और फिर उसके बाद अलग-अलग हो जाते। यह अजीब सी बात होती। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमारे शरीरों को ऐसा नहीं बनाया। यद्यपि चिकित्सा विज्ञान ने शरीर के कुछ अंगों को नया बनाने के हर सम्भव प्रयास किए हैं, तौभी सामान्य नियम यह है कि आपकी देह के प्रत्येक अंग आपकी देह के प्रति "समर्पित" हैं तभी आपके शरीर से जुड़े हुए हैं और वे ठीक से काम करते हैं। आपका शरीर एक साथ अधिक कार्य करने के योग्य है।

हमारा भौतिक शरीर स्थानीय कलीसिया को एक "संदेश" देता है, जो मसीह की सम्पूर्ण देह का एक अंग है। जब हम स्थानीय कलीसिया के बारे में सोचते हैं, तो यह एक सामान्य बात है। हम लोगों को एक कलीसिया से दूसरी कलीसियाओं में भागते हुए देखते हैं। परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता कि उसके लोग अपना मसीही जीवन ऐसा बिताएं। प्रत्येक मसीही विश्वासी के लिए आवश्यक है कि वह एक स्थानीय कलीसिया के प्रति समर्पित हो। जहाँ वह विश्वास करता है कि प्रभु उसको वहाँ लाया है। हमें स्थानीय मसीही विश्वासी कलीसिया के प्रति समर्पित होना है जहाँ परमेश्वर ने हमें

रखा है। केवल तब ही हम सम्पूर्ण आशीषों को अनुभव कर पाएंगे जब हम स्थानीय कलीसिया के प्रति विश्वासयोग्य होंगे! वे लोग जो इधर-उधर मंडराते हैं उनको अधिक लाभ नहीं होता, और वे किसी कार्य को करने में सहायक नही होते हैं!

हम केवल तभी लम्बे समय तक आशीषें और लाभ ले पाएंगे जब हम समर्पित होंगे। हम में से बहुत से लोग "रविवार की सुबह मनोरंजन" चाहते हैं और इसी कारण हम एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में भागते फिरते हैं। हम चाहते हैं कि पादरी साहब ऐसा प्रचार करें जो हम सुनना चाहते हैं। परन्तु यदि पादरी साहब ने परमेश्वर के वचन से कुछ ऐसा प्रचार किया जो हम सुनना नहीं चाहते, तो हमारा समर्पण खिड़की से बाहर निकल जाता है और हम दरवाजे से बाहर निकल जाते हैं। यदि हम चाहते हैं कि हमें लम्बे समय तक लाभ और आशीषें मिलें तो हमें स्थानीय कलीसिया के प्रति समर्पित होना है और वहीं पर कार्य और सेवा करना है।

प्रतिफल

इब्रानियों 11:6
जो उसे सच्चाई के साथ खोजते हैं उनको वह प्रतिफल देता है।

हमें उसे सच्चाई से खोजना है। परमेश्वर को खोजने का एक समर्पण है। क्या हम सच्चाई से परमेश्वर को खोजते हैं अथवा केवल तब ही खोजते हैं जब हमारे पास बाकी समय होता है? क्या हम परमेश्वर के वचन को पढ़ने और प्रार्थना करने में समय बिताने के प्रति समर्पित हैं? अथवा हम केवल तब ही परमेश्वर को खोजते हैं जब समय अनुमति देता है? बाइबल कहती है कि परमेश्वर उन लोगों को प्रतिफल देता है जो सच्चाई से उसको खोजते हैं, न कि उनको जो अपनी सुविधानुसार उसे खोजते हैं। समर्पित होने का एक प्रतिफल है। वह व्यक्ति जो समर्पित है वह परमेश्वर के प्रतिफलों को अपने जीवन में अनुभव करता है।

उन्नति

1 तीमुथियुस 4:15आ
ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।

वह व्यक्ति जो समर्पित है वह उन्नति करेगा। पौलुस एक जवान व्यक्ति, जिसका नाम तीमुथियुस है, को सलाह दे रहा है कि कैसे वह परमेश्वर का सेवक बने। वह कहता है कि इन निर्देशों का पालन अधूरे मन अथवा सुविधानुसार न करे, परन्तु पूर्ण रूप से इन बातों पर ध्यान लगाए रखे जो उसे सिखाई गईं थीं। यदि वह ऐसा करे तो उसकी उन्नति, परिपक्वता, वृद्धि और उसकी प्रगति सब मनुष्यों पर प्रकट होगी।

हम अपने जीवनों में भी इस सिद्धान्त को लागू कर सकते हैं। हमें परमेश्वर के सेवक होने के लिए समर्पित होना है, फसल को काटने के लिए समर्पित होना है, विश्वासियों के समक्ष उदाहरण होने के प्रति समर्पित होना है, कलीसिया के अगुवाई की ज़िम्मेदारी के प्रति समर्पित होना है। जब हम समर्पित होते हैं तो हमारी उन्नति प्रकट होगी। वह व्यक्ति जो अधूरे मन से काम करता है वह वहीं रहेगा जहाँ वह अभी है। जब हम अपने आप को —आत्मा, प्राण और देह—के साथ उस कार्य में लगाते हैं जो आपके सामने है, तब ही हम उन्नति करेंगे और लोग इसे देखेंगे।

3
क्या आप समर्पित हैं?

यदि कोई हमसे हमारे समर्पण के बारे में पूछे तो हम शायद जल्दी से कह देंगे कि हम समर्पित हैं। शायद नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हमारे समर्पण पर और अधिक प्रकाश डालेंगे।

- क्या आप समर्पित व्यक्ति हैं अथवा आप सुविधानुसर जीते हैं?
- क्या हम वह करने के लिए समर्पित हैं जो सही है? क्या हम धार्मिकता के कार्य करने के लिए समर्पित हैं, सदैव सही कार्य करने के प्रति, हर जगह और प्रत्येक परिस्थिति में समर्पित हैं, अथवा हम समझौता कर के अपना स्थान सुविधानुसार बदल देते हैं?
- क्या हम प्रभु यीशु मसीह के प्रति अपनी स्थानीय कलीसिया और मसीह की देह के प्रति समर्पित हैं?
- क्या हम अपने जीवन साथी, विवाह और परिवार के प्रति समर्पित हैं? क्या हम अपने पति/पत्नी से प्यार करेंगे जब परिस्थितियाँ ठीक हों और जब परिस्थितियाँ ठीक न भी हों?
- क्या हम उन प्रतिज्ञाओं के प्रति समर्पित हैं जिन्हें हम अपने शब्दों को बोल कर करते हैं?
- क्या हम अपने कार्य के स्थान, अपने अधिकारी, अपने सहकर्मियों और अपने मित्रों के प्रति समर्पित हैं?
- क्या हम परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए समर्पित हैं?

प्रभु यीशु मसीह के प्रति हमारा समर्पण कितना गहरा है? प्रभु यीशु ने कहा, *"और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज रखेगा उसी का उद्धार होगा"* (मत्ती 10:22)। क्या हम

प्रभु यीशु मसीह के प्रति तब ही समर्पित हैं जब यह हमारे लिए सुविधाजनक और आसान है अथवा हम उसके पीछे चलने में यहाँ तक समर्पित होंगे कि जब लोग हम से घृणा करें तौभी हम उसके पीछे चलते रहें? मसीह के प्रति हमारे समर्पण की कितनी गहराई है?

अपनी स्थानीय कलीसिया के प्रति हमारा समर्पण क्या है? क्या हम अपनी स्थानीय कलीसिया के प्रति तब ही समर्पित हैं जब सब कुछ आसान है—अच्छा संगीत सुनकर और अच्छा सन्देश सुनकर अथवा हम तब भी उतने ही समर्पित हैं जब कलीसिया तूफानों से होकर गुज़र रही है? क्या हम तब भी उसी के साथ होंगे? अथवा हम किसी अन्य कलीसिया को खोजना आरम्भ कर देंगे?

ऑल पीपुल्स चर्च में हम सब बाहर जाकर यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने हेतु समर्पित हैं। जब हम बाहर जाते हैं और सुसमाचार सुनाते हैं तो निश्चित रूप से लोगों का ध्यान हमारी ओर आकर्षित होगा। हम निश्चित रूप से सताव का सामना करेंगे। क्या हम उस स्थानीय कलीसिया में ठहरेंगे जो सताई जा रही है अथवा कहीं और चले जाएगें? क्या हम कहेंगे, "प्रभु मैं विश्वास करता हूँ कि मैं इस देह का एक भाग हूँ। यदि वह देह सताई जाती है तब भी मैं इसी में समर्पित होकर ठहरा रहूँगा और जो कुछ हमारे मार्ग में आता है उसका सामना करूँगा?" यदि आप ऐसी स्थानीय कलीसिया की खोज में हैं जहाँ सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है, आराम है, कभी सताई नहीं जाती, तब ऑल पीपुल्स चर्च आपके लिए नहीं है। परन्तु यदि आप एक ऐसी देह की खोज में हैं जो यीशु को बिना संकोच के प्रचार करती है, जो सताई जाएगी, और ऐसी कलीसिया की खोज में हैं जहाँ आप यीशु मसीह के नाम के कारण कुछ विपत्ति उठा सकें तो ऑल पीपुल्स चर्च में आपका स्वागत् है!

परमेश्वर ने हमें आदेश दिया है कि हम बाहर जाएं और सुसमाचार का प्रचार करें, लोगों को अंधकार से निकाल कर उसकी महान् ज्योति में लेकर आएं। जब हम ऐसा करते हैं तब शैतान चुप नहीं बैठता। लेकिन समर्पण यह है, मैं इस स्थानीय कलीसिया का भाग हूँ और यदि हम सताए

जाते हैं तो हम इसका सामना करेंगे और विजयी होकर बाहर आएंगे। यह हमारा समर्पण होना चाहिए। हम उस दर्शन के प्रति समर्पित हैं जो परमेश्वर ने हमें एक कलीसिया के रूप में दिया है।

क्या हम स्थानीय कलीसिया के अन्य सदस्यों के प्रति समर्पित हैं? क्या हम एक दूसरे की चिन्ता करते हैं? क्या हम एक दूसरे को प्यार करते हैं?

क्या हमारे शहर में अन्य मसीह की देह हैं जिनके प्रति हम समर्पित हैं? यदि हम उन कलीसियाओं के प्रति समर्पित हैं जो हमारे शहर में हैं तो हम पादरियों/सेवकों को जिन्हें परमेश्वर ने खड़ा किया है, उनके विरोध में बुरी बातें करने से झिझकेंगे। हम सदैव उनकी भलाई और सम्पन्नता की कामना करेंगे। यदि उनमें से कुछ गिरते हैं, लड़खड़ाते हैं और गलतियां भी करते हैं तो हम उनके लिए प्रार्थना करेंगे न कि उनको काट कर नीचे गिरा देगें।

क्या हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के स्वप्नों, दर्शनों, और बुलाहट के प्रति समर्पित हैं? बाइबल हमें बताती है, *"इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो तथा प्रभु के कार्य में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है"* (1 कुरिन्थियों 15:58)। सदैव प्रभु के कार्य के प्रति समर्पित रहें क्योंकि आप जानते हैं कि प्रभु में आपका किया गया परिश्रम व्यर्थ नहीं है।

प्रकाशितवाक्य 3:15,16

15 मैं तेरे कार्यों को जानता हूँ कि तू न ठण्डा है न गर्म। भला होता कि तू ठण्डा या गर्म होता।

16 इसलिए कि तू गुनगुना है, न ठण्डा है और न गर्म, मैं इसे अपने मुँह से उगल दूँगा।

हमें ज़बरदस्त समर्पण की आवश्यकता है। यह काफी नहीं है कि "थोड़ा बहुत काम" चलता रहे यदि हमारा सर्मपण यीशु के प्रति गुनगुना है। हमारे सर्वोत्तम कार्यक्रम व्यर्थ हैं यदि उनका जन्म यीशु मसीह के प्रति ज़बरदस्त समर्पण के साथ नहीं हुआ। हमें यह फैसला करना है कि या तो हम ठण्डे रहें या हम गर्म रहें।

यीशु ने हमें चेतावनी दी है कि अन्तिम दिनों में बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। *"अधर्म के बढ़ने के कारण बहुतों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज रखे रहेगा उसी का उद्धार होगा"* (मत्ती 24:12,13)। यीशु मसीह के प्रति आपका समर्पण आपको अन्त तक धैर्य रखने के योग्य बनाएगा।

अपने आपको समर्पित करने की घड़ी अभी है!

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौता के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारी वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस परामर्श व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
संबंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य संबंधित मुद्दे
परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
आत्मिक समस्याएं
ज़िंदगी की सीख

क्रिसलिस परामर्श सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 50200068829058
IFSC Code: HDFC0004367
Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं कि गति से सीखने के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: **apcbiblecollege.org**

आज के संसार में समर्पण एक ऐसा गुण है जो सामान्य रूप से संसार में दुलर्भता से पाया जाता है। अधिकांश लोग वह करना चाहते हैं जो आसान है और समर्पित लोगों को ढूँढ़ पाना कठिन है। समर्पण एक अनुशासन है। यह एक जान बूझकर चुनाव करने की प्रक्रिया है।

बाइबल हमें समर्पित होने के विषय में सिखाती है। प्रभु यीशु ने कहाः "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है। वह एक से प्रेम करेगा और दूसरे से घृणा करेगा, अथवा वह एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (मत्ती 6:24)। यीशु कहते हैं कि हम इसी प्रकार बनाए गए हैं। मनुष्य के दो परस्पर विरोधाभासी समर्पण नहीं हो सकते। यह पुस्तक समर्पण की सामर्थ्य पर बल देती है और आपको प्रेरित करेगी कि आप जो कुछ भी करें उसके प्रति समर्पित हों। अपने आपको समर्पित करने की घड़ी अभी है!

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org